गोपी-गीत

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

The gopis said: O beloved, Your birth in the land of Vraja has made it exceedingly glorious, and thus Indira, the goddess of fortune, always resides here. It is only for Your sake that we, Your devoted servants, maintain our lives. We have been searching everywhere for You, so please show Yourself to us.

प्रियतम तेरी जय हो ढूंढ रहे नैन तुझे, अब तो दरस दे तुम घनश्याम
धन्य है ब्रज धरा जंहा वसति इंदिरा क्यूंकि तुने जन्म लिया वंहा श्याम

तेरी हम भक्तन, कैसे गुजारें रतियाँ तुम बिन, अब तो दे दे दरस प्यारे
ढूंढा सर्वत्र तुम्हे प्रियतम, तू न मिला, जाने खो गया कँहा तू न्यारे

शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा ।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥

O master of our hearts, we are your priceless servants. O beloved, fulfiller of all our desires, Is it not slaughter on your part to strike us with the rays of your divine eyes which are more beautiful than the petals of a beautiful lotus in the clear autumn lake ?

चितवन मनोहारी तुम्हारी, मात दे कमल-जलाशय को प्रेमस्वामी
शरदकाल में जैसे सुन्दर निर्मित शतदल कोष की लहरें हों अंतर्यामी

क्यूँ कर रहे घायल, क्यूँ कर रहे वध प्रिय दासियों का तुम वरदाता
नयन तो न्योछावर तुझ पर, तेरे प्रेम पर, बिन-मोल ही, हे जगत्राता |

विषजलाप्ययाद्व्यालराक्षसाद्वर्षमारुताद्वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद्विश्वतोभया दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥

O Mighty One! from the destruction through the poisonous water of Yamuna [by the demon Agha in the guise of a Kaliya snake], from deluging rain and raging storms, from lightning and from demons Vrishabh and Vyom, time and again, you have protected us from various types of fears..

हे नारायण ! तुझने हमें बचाया अनेकों बार, साधिकार विविध प्रकार
विष-जल, अघासुर, तृणावृत, मयदानवसूत जैसे असुरों से बारम्बार

होते मात्र पुत्र गोपी यशोदा के तो करते सामान्य मानव व्यवहार
हो समस्त देहधारियों में अन्तस्थ साक्षी करते असामान्य व्यवहार

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान्सात्वतां कुले ॥४॥

You are not just the son of Yashoda. but you are inherent witness in all embodied beings. O eternal companion! In response to the prayer of Brahma, the creator of the universe, you have reincarnated among the yadu's to protect the world.

आप तो अवतरित हुए निश्चित ही, सात्वत कुल में करने रक्षा हमारी
क्यूँ करते उपेक्षा भक्तों की यूँ, जब ब्रह्मा ने बुलाया कर स्तुति तुम्हारी

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।

करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

O the fulfiller of all desires! whoever takes refuge in your lotus feet from the torments of samsara (materialistic world), they become fearless by your protection. O our beloved, the bestower of all boons, do lay your hands on our head.

हे वृष्णिधुर्य ! कमला के हाथों को पकड़ने वाले ये कर है कमल समान
हाथों को रख मस्तक,शरण तेरे चरण के जो पड़ते देते ये कर अभय दान

व्रजजनार्तिहन्वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥

O Destroyer of the miseries of the inhabitants of Vraja! Your mere smile is enough to shatter false pride of your love ones. O our beloved companion, graciously accept us, your servants. We are fully surrendered at your lotus feet. Show your most beautiful lotus like face to us.

भव-सागर से करो पार,नाथ, कामना बस यही, रख कर-कमल सर पे
हे कष्ट हारी, हे मुरारी, तुम हरो कष्ट बृज वासियों का, अदभुत वर दे,

मिथ्या अभिमान हो शमित तत्काल देख आपकी मुस्कान-आकर्षण को
तेरी ये भक्तन दासियाँ तड़प रहीं अब तो तेरे सुदर कमल-मुख के दर्शन को

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।
फणिफणार्पितं ते पदांबुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥

Your lotus-feet destroy the sins of those who submit to you - the lotus feet that follow the foot steps of grazing cows, and which are coveted by the goddess of Fortune, and which gracefully danced on the hood of Kaliya Snake. O Lord, please put your lotus feet on our chest(heart) to soothe

our burning desire and rid us of the sorrows lurking in our hearts.

चरण कमल नष्ट करते पाप समस्त देहधारी के लें जब शरणागत के नाम
गौ वंश के सम्वर्धन हेतु चरण आपके उठे थे जो चरण हैं लक्ष्मी के धाम

चरणों को रख मस्तक पर किया तुने, मर्दन कालिया महा सर्प का भी
कृपया वक्ष स्थल पर रखें हमारे, हरण हो स्थित वासना-काम का भी

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥

O Lotus-eyed One! Your speech is so sweet. Every single word, every little sound, every single letter is very charming. Even the most wise and learned get engrossed in it and sacrifice everything for it. After tasting the nectar of the sound of your voice, your faithful Gopis are falling in love. Now give us the gift of life with the divine nectar from your lips.

राजीवनयन ! आपकी मधुर वाणी व् शब्द-मोहक करते आकृष्ट हमें
इन मोहक होठों से पिला अमृत वाणी और दें जीवन दान उत्कृष्ट हमें

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥

The nectar of Your words and the descriptions of Your activities are the life and soul of those suffering in this material world. These narrations, transmitted by learned sages, eradicate one’s sinful reactions and bestow good fortune upon whoever hears them. By mere listening to them removes all sins and sufferings and bestows the supreme bliss and welfare as well. Certainly, those who spread the message of Godhead are most munificent.

कौन समझे इस जग में आपकी लीलाओं को, आपके अमृत शब्दों को
जीवन-प्राण देते ये मनोहर वचन, हरते कष्ट समूल मनुज के पापों को

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥

Your smiles, Your sweet, loving glances, the intimate pastimes and confidential talks we enjoyed with You—all these are auspicious to meditate upon, and they touch our hearts. But at the same time, O deceiver, they very much agitate our minds.

निश्चय वे जन हैं दाता महान प्रसारित करते सन्देश आपका जगभर में
जिसमे समाहित ज्ञान, अध्यात्म शक्ति जो शीतल करे जीवन समर में

चलसि यद्व्रजाच्चारयन्पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥

O beloved master, your feet are more tender and beautiful than a Lotus. When you take the cows for grazing, our hearts become restless at the very thought of your feet being pricked by the spiked husks of grain and the rough grass and plants. It is indeed painful for us.

तुम्हारा वियोग क्षुब्ध करता इस ह्रदय को, ऐ छलिया अब तो शीघ्र आ
याद आती है तुम्हारी वे गुप्त रहस्य मयी बातें, वे मधुर चितवन प्रभा हे स्वामी !

तेरा गौ चराने जाना भी विचलित करता था इस विचार से
कमल से भी कोमल पग आहत होते होंगे कटीले अन्न-तृण के संहार से

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥

At the end of the day, when you return from the forest, we see your beautiful lotus face covered with dark curly locks and covered with dust. Our beloved, when You repeatedly show us Your lotus face, You arouse lusty desires in our minds.

दिवस अवसान होने पर स्वतः दर्शन होते धुल धूसरित नील केश अंचल के
होते दरस मन-कामना जगाते आपके इन शतदल मुखरित मुख मंडल के

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपङ्कजं शंतमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥

Your lotus feet, which are worshiped by Lord Brahma, fulfill the desires of all who bow down to them. They are the jewels of this universe, In times of difficulty, they are appropriate object of meditation, by which all sufferings are removed. O the resident of Kunj ! Please put your pious lotus feet on our chest (heart) to bless and give peace to confer supreme beatitude and peace to us.

ब्रह्मा-पूजित चरण पूर्ण करते अभिलाषाएं हमारी, नतशीश है आपके
आभूषण धरा के, असंतोष-आसक्ति करते निवारण, चिंतन चरण हैं आपके

रखें कोमलचरणों को स्तन पर हमारे जो कामनाओं को कुचलने वाले
वितरण हो रसपान होठों का जो शोक नाशक माधुरी हर्ष बढाने वाले

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

O our hero, Fill us with your enchanting music which drop like

ambrosia from the flute kissed by your lips and the pitch, which heightens our spiritual ecstasy, dispel our sorrows and make us oblivious to every other allurement. Your sweet music is divinely intoxicating.

क्या हम बांसुरी से भी है तुच्छ जो उसे होठो से लगा अमृत गान सुनाते
नही आते हमारी आसक्ति दूर करने क्यूँ नही मधुर रस पान कराते

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृशाम् ॥१५॥

O our beloved, during the day, when you go off to the forest, every moment (without seeing you) passes like a yug (age). When you return in the evening and we eagerly look upon your most beautiful face framed with curly locks, our pleasure is hindered by our eyelids. At that time, we feel that the creator of eyelids made it without reason.

अल्पांश भी लगता युग सा उस क्षण जिस क्षण जाते वन की और प्रियतम
तुम्हारी अलकें ये कुटिल केश राशि जिससे लगता मुख मंडल सुन्दरतम

तडपाने को ये आनंद मयी मूरत क्यूँ बनाई सृष्टा ने जो है बुद्धि से मंद
नयन देख भी सकें तो न देख सकें क्यूंकि ये पलकें तो आनंद बोझ से हैं बंद

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥

Dear Achyuta, You know very well why we have come here. We have disobeyed and disowned our own relatives, husband, son, brother and our family just to have a glimpse of You. Who, but a cheater like You, would abandon young women like us, who come to see You in the middle of the night, captured by the melodious music of Your flute?

तडपाने को ये आनंद मयी मूरत क्यूँ बनाई सृष्टा ने जो है बुद्धि से मंद
नयन देख भी सकें तो न देख सकें क्यूंकि ये पलकें तो आनंद बोझ से हैं बंद

त्याग मोह भाई, पूर्वज व् सम्बन्धियों का, अर्ध रात्रि में आती दर्शन को
हे अच्युत ! हे छलिया ! यह तेरा वेणु गीत बुलाता हमें करने ये मन अर्पण को

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

Our minds are repeatedly bewildered as we think of the intimate conversations we had with You in secret, feel the rise of lust in our hearts and remember Your smiling face, Your loving glances and Your broad chest, the resting place of the goddess of fortune. Thus we experience the most severe hankering for You.

एकांत वार्ता का चिंतन, प्रेम मयी चितवन , हंसित मुख आभा का स्मरण
लक्ष्मी बसती वह विशाल वक्ष स्थल करता अनुभूत कामना का वरण

अनुभूति होती हमें गहनलालसा तुम्हारी स्मृति से, उठती हृदय कामना
प्रिय मेरे क्यूँ नही आते शीघ्र अब, रहा न जाए , है प्रबल मिलन भावना

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।

त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

O beloved, Your all-auspicious manifestation is for the removal of sorrows of residents of Vraja and for the well being of the entire universe. Our heart and mind long for your heavenly association. Please bless us with some remedy that will put an end to the pain in our heart.

प्रियतम ! मंगल मय प्राकट्य आपका कष्ट हरता व्रज के वन वासियों का
सानिध्य की औषधि दे, शमन करें रोग हम भक्तन व्रज निवासियों का

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेष भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

O dearly beloved! As your feet are more tender than a lotus, we use utmost caution while putting them on our chest(heart). With same tender feet you wander in the deep forest bare feet. The mere thought of you treading with those tender feet on the thorny, stony paths in the forest give us pain and we loose our wits. O Lord, our existence is only for you. We are only living for you. We are only yours!!

चिंतित हम विरहनियाँ कंही चुभ न जाएँ कंकड़ वन के इन कोमल पांवों में
रखें धीरे से अपने वक्ष पर यह सोच न पहुंचे चोट इन कोमल पाओं में

इति श्रीमद्भागवत महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥

विवेचन:-

गो कहते इन्द्रियों को पी है पीना, गोपी है इन्द्रिय-जीत
कृष्ण आकर्षण और हैं जग के सृष्टा,पुंज ज्योति परमित

इन्द्रिय-वश विग्रह, परमात्मा मिलन का सन्देश गोपी गीत
सिखाता त्याग कर काम-वासना- उत्कंठा पाओ मीत

छोड़ मोह सम्बन्धियों का शरण जाओ चरण-कमल इश्वर पे
स्थिर न हो मन तो एकाग्रचित करो इसे बंशी गान के स्वर से

वध सदृश तन है जब मन है, पर नही भक्ति इश्वर वंदन में
बिन मोल ही मिलते परमात्मा, मात्र स्वः न्योछावर मन में

काले नाग से कल्मष कृत हमारे नष्ट करें प्रभु बारम्बार
मोह भंग हो, निर्मल हो भक्ति और हों शुद्‌ध हमारे विचार

लोभ-मोह-मद-माया-द्वेष दूर करने की इच्छा चाहिए
प्रभु के चरण-कमल में शरण की प्रबल स्वेच्छा चाहिए